

समांशिक वि. (तत्.) 1. समान हिस्सों/भागों वाला
2. समान भाग/हिस्सा पाने वाला।

समांस वि. (तत्.) मांस युक्त।

समाँ पुं. (अ.) सुंदर दृश्य, अच्छा नजारा।

समा स्त्री. (तत्.) 1. वर्ष, साल 2. ग्रीष्म ऋतु वि.
समता वाला पुं. एक क्षुद्र अनाज जिसे सवाँ/सावाँ
भी कहा जाता है।

समाकर्षण पुं. (तत्.) विशेष आकर्षण।

समाकलन पुं. (तत्.) 1. उचित आकलन/समन्वय
2. एकीकरण 3. पूर्ण करना।

समाकलित वि. (तत्.) जिसका समाकलन किया
गया हो।

समाकार वि. (तत्.) 1. जो आकार की दृष्टि से
समान हो 2. सर्वत्र एक से आकार वाला।

समाकुल वि. (तत्.) 1. बहुत अधिक घबराया हुआ
2. अति व्याकुल।

समाकृति स्त्री. (तत्.) समान आकृति, समान रूप
वि. समान आकृति वाला।

समाकृतिक पुं. (तत्.) भिन्न संघटन परंतु समान
रासायनिक गुणों के वे पदार्थ जो समरूप केलास
बनाते हैं।

समाख्या स्त्री. (तत्.) 1. यश, कीर्ति, प्रसिद्धि,
ख्याति 2. नामख संज्ञा 3. व्याख्या।

समाख्यात वि. (तत्.) 1. प्रसिद्ध 2. अच्छी तरह
वर्णित 3. अभिहित 4. घोषित।

समागत वि. (तत्.) 1. आया हुआ 2. जो आकर
सामने उपस्थित हुआ हो।

समागम पुं. (तत्.) 1. बहुत से लोगों का एक
स्थान पर एकत्रित होना, सम्मेलन 2. भेंट,
मिलन 3. कामक्रीड़ा, रतिक्रीड़ा।

समाघात पुं. (तत्.) 1. वध हत्या, हिंसा 2. युद्ध
लड़ाई 3. आघात टक्कर।

समाचरण पुं. (तत्.) 1. शुद्ध आचरण 2. श्रेष्ठ
व्यवहार 3. कार्य का संपादन।

समाचार पुं. (तत्.) 1. आगे बढ़ना 2. अच्छा
आचरण 3. किसी कार्य या व्यापार की सूचना,
खबर 4. वृत्तांत 5. हालचाल 6. कुशलमंगल।

समाचार पत्र पुं. (तत्.) नियत अवधि में नियमित
समय पर प्रकाशित होने वाला वह पत्र जिसमें
देश-विदेश की खबरे रहती हों, अखबार।

समाचार पत्रिका स्त्री. (तत्.) वह पत्रिका जिसमें
विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत रोचक विषयों से
संबंधित समाचार संक्षेप में प्रकाशित होते हैं।

समाच्छन्न वि. (तत्.) चारों ओर से पूरी तरह
छाया या ढका हुआ।

समाच्छादन पुं. (तत्.) चारों ओर से पूरी तरह छा
देना या ढकना।

समाज पुं. (तत्.) 1. किसी देश, प्रदेश या विशिष्ट
भूखंड में साथ रहने वाले मनुष्यों का समूह, जो
अपनी सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बँधे होते हैं
2. एक ही प्रकार का कार्य करने वाले मनुष्यों
का समुदाय 3. विशिष्ट धार्मिक संस्था के द्वारा
अपनी पृथक् पहचान होने के बोध से बँधा
मनुष्य समूह, चाहे वह एक देश में रहता हो या
भिन्न-भिन्न देशों में फैला हुआ हो 4. सभा या
गोष्ठी 5. विशेष प्रकार के लोगों का समूह।

समाज सुधार पुं. (तत्.) समाज में व्याप्त
कुरीतियों, आडंबरों, दोषों को दूर करने का कार्य।

समाज सुधारक पुं. (तत्.) सामाजिक कुरीतियों को
दूर करने का प्रयास करने वाला।

समाजत स्त्री. (तत्.) 1. लज्जा, शरमिदंगी 2.
विनय 3. प्रार्थना, निवेदन।

समाजन पुं. (तत्.) ऐसे सभी अंतरमानवीय संबंध
या सामाजिक अन्तःक्रियाएँ जो संघटन, विघटन
या दोनों की मिली-जुली विशेषताओं से युक्त
हो।

समाजपरक वि. (तत्.) समाजविषयक, समाज-
संबंधी।

समाजबाह्य वि. (तत्.) 1. समाज में बहिष्कृत
अथवा निष्कासित 2. जो समाज संबंधी न हो,
समाजेतर।

समाजवाद पुं. (तत्.) भूमि और उत्पादन के साधनों
पर सामाजिक स्वामित्व का सिद्धांत।